शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 सितम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भिलाली बाल लोककथाओं में शिक्षा

डॉ. गजेन्द्र आर्य
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

पश्चिमी मधप्रदेश में एक दुर्दमनीय जनजाति निवास करती है भिलाला। इस वनवासी समुदाय की संस्कृति एवं साहित्य का सुन्दर एवं रोचक चित्रफलक वनांचल में फैला है। निमाड़ की पहाड़ियों के घनीभूत समुच्चय में ये लोग उल्लसित रहते हैं। एक तरफ इनकी संस्कृति उत्फुल्ल करती तो दूसरी तरफ इनका साहित्य विस्मय विमुग्ध करता है। प्रस्तुत शोध पत्र में भिलाली बाल लोककथाओं में शिक्षा पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

भिलाला जनजाति की भावाभिभूत करती आधारशिला सुदृढ़ है। धुरंधर धनुर्धारी एकलव्य एवं माता शबरी को ये लोग अपना पूर्वज एवं आदर्श मानते हैं। इसका आकट्य प्रमाण ये है कि आज भी धनुष बाण चलाते समय अंगूठे का उपयोग नहीं करते। वे कहते हैं अंगूठा तो द्रोणाचार्य को दे दिया।

भिलाली साहित्य आज भी वन प्रदेश में अपनी आभा बिखेर रहा है। ठेठ भिलाली परिवेश में रचा बसा साहित्य वैषम्य परिस्थितियों को नितांत सबलता से सुलझाने के घनीभूत उपाय प्रस्तुत करता है। इस साहित्य की बाल लोककथाएँ शिक्षा और संस्कार से ओतप्रोत हैं।

भिलालों की अभिव्यक्ति इन पुण्य कथाओं में संचित है। ये जीवन संपोषक कथाएँ उत्फुल्ल करती एवं दिशा निर्देश भी देती हैं। इनमें लोक परम्पराओं का सहारा लिया जाता है। जिस कहानी में लोक परम्पराओं का सहारा लेकर लोकमानस अपनी अभिव्यक्ति करता है वह लोककथा कहलाती है।1

हम तथ्य टटोलते हैं कि आदिवासी बच्चों को प्रेरणा कहाँ से मिलती है, सूझ-बूझ कहाँ से प्राप्त होती है, सही दिशा कौन देता है, तो पता चलता है काका-काकी, दादा-दादी, नाना-नानी लोककथाओं के द्वारा ये सब उपलब्ध करवाते हैं। इस तरह हमें आदिवासी क्षेत्रों में अति उज्ज्वल परिपाटी के दर्शन होते हैं। आदिवासियों के पास अभिव्यक्ति के लिए बोली तो है परन्तु लिपि नहीं है। इसलिए आदिवासियों का साहित्य सृजन भी मौखिक है और हस्तांतरण भी मौखिक रूप से होता है। इस सन्दर्भ में महत्वपूर्ण यह है कि लिपि न होने के बावजूद आदिवासियों की साहित्यिक धरोहर सम्पन्न एवं सशक्त है।2

भिलाली लोककथाओं में शिक्षा

भिलाली बाल काथाओं की कथावस्तु में वन, नदी-नाले, खेत, खलिहान और गाँव मुख्य रूप से होते हैं। कथानक में लचीलापन होता है जो सरल एवं सरस रूप में समझ में आ जाता है। कथानक शिल्प सिकुड़ा हुआ नहीं होता, वह बालकों के मन पर पकड़ बनाये रखता है, जो मनोवृत्तियों को तराशने में सफल है। कथा सूत्र सुसंगठित तो

होते ही हैं अपितु रोचकता आदि से अन्त तक बनी रहती है। इस प्रकार शिक्षा दी जाती है, क्योंकि आदिवासी समाज को पता है कि अपने बच्चों को शिक्षित एवं संस्कारित करना जरूरी है। उन्हें अक्षरों की शिक्षा मिले या न मिले लेकिन संस्कारों की शिक्षा अवश्य दी जाती है। शिक्षा जीवनभर चलने वाली सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का नाम है। वह एक गतिशील प्रक्रिया है। व्यापक सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण होती हैं।3

लोककथाएँ रात में ही कही-सुनी जाती हैं, दिन में नहीं। कहते है दिन में वार्ता कहने से मामाजी के घर का मार्ग भूल जाते हैं। भिलाले वार्ता को वातरा उच्चारण करते हैं। जब कोई कथा सुनाता है तब बच्चे समुत्सुक सुनते। उसके एकैक प्रसंग सात्विक प्रभाव डालते चले जाते हैं। इन्हें समूह में बैठकर भी सुना जाता है और घर में एक-दो संख्या में भी। कभी अलाव के आपसपास बैठकर सुनते हैं तो कभी भुट्टों के दाने निकालते हुए। वातरा सुनाने का अनुबन्ध होता है कि एक बालक हुंकारा देगा, ताकि कहने वाले को समर्थन मिलता रहे और चयनित बच्चा बीच-बीच में हाँ, हाँ कहता जाता है। इस प्रकार वनवासी समाज की परिधि में एवे उस क्षेत्र के अन्तर्गत जो भी विषय आते हैं, उनका ज्ञान करवाया जाता है। षिक्षा का पहला उद्देश्य है ज्ञान प्रदान करना।4

भिलाला वनवासी कृषक एवं श्रमिक होते हैं। वे लोककथाओं के माध्यम से बच्चों की मानसिकता को परिपक्व करने का प्रयत्न करते हैं ताकि उनका कृषक-श्रमिक जीवन सफल हो। ऐसी ढेर सारी कथाएँ मिल जायेंगी, जिसमें किसान संघर्ष करके सफलता प्राप्त करता है। अपनी फसल बचाने के लिए कभी वन्य प्राणियों से संघर्ष, कभी चोरों से संघर्ष, कभी प्राकृतिक आपदाओं से संघर्ष। शिक्षा का दूसरा उद्देश्य है जीविकोपार्जन के लिए शिक्षार्थी को सक्षम बनाना। भावी नागरिक अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं कर सके।5

भिलाली साहित्य में बहुत सारी बाल लोककथाएँ मिल जायेंगी। 'अंध्यारी रात मा टोप-टोप वारलु बालक मोटली पूँछडी वालो माकड्यो चिरली हुड आई गुई डाहला नी नैति एक ती चढाव एक' इत्यादि। इन बाल लोककथाओं ने प्रेरणादायिनी धाराओं को प्रभावित किया। रिंगण नामक लोककथा का कथानक संकीर्ण मनोवृत्तियों से बचने का सुगम मार्ग प्रतिपादित करते हुए शिक्षा देता है कि संगठन में शक्ति होती है। छोटा-बड़ा, ऊँच-नीच का भाव त्यागकर सबको संगठित करना चाहिए, तब ही आतताईयों से टक्कर ले सकते हैं। इस कथा में बेगन के बैल चोरी हो जाते हैं। वह चोरों से बैल लाने में समर्थ नहीं होता, क्योंकि वह छोटा है, निर्बल है, तब वह अपने मित्रों को संगठित करता है। सांप, बिच्छु, पक्षी, लाठी, रस्सी को वह एकजुट करे शत्रुओं पर आक्रमण कर देता है और अपने बैल वापस ले आता है। इस प्रकार लोककथाओं के माध्यम से सामाजिक समरसता, संगठन, देश, समाज का परिचय भी करवाया जाता है। शिक्षा का तीसरा उद्देश्य नागरिकता से सम्बन्धित है। प्रत्येक व्यक्ति जन्म लेते ही किसी न किसी राष्ट्र समाज का सदस्य हो जाता है।6

भिलाला जनजाति देवास, खंडवा, बुरहानपुर, खरगोन, बडवानी, आलीराजपुर एवं धार जिले में पायी जाती है। इनमें से आलीराजपुर, बड़वानी एवं धार जिले में इनकी संस्कृति एवं साहित्य की आधारभूत संरचनाएँ आज भी फलफूल रही है और वास्तव में ये तीन जिले इनका सांस्कृतिक एवं साहित्यिक केन्द्र है। धनुष-बाण एवं फालिया

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 सितम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

इनके मुख्य अस्त्र-शस्त्र हैं। 1857 की क्रांति में इन्होंने अंग्रेजों से घमासान टक्कर ली थी। खरगोन जिले के क्रांतिकारी रघुनाथसिंह भिलाला के नेतृत्व में भिलाले उद्वेलित हो उठे थे। लोककथाएँ चरित्र निर्माण करती हैं, जिससे समाज को लाभ होता है। चरित्र से ही व्यक्ति या समाज का चित्र सामने आता है। शिक्षा का चौथा उद्देश्य है चरित्र निर्माण करना। किसी व्यक्ति में जो गुण-दोष होते हैं, उनकी शाखा-प्रशाखाओं सहित जो एक पूरा चित्र उस व्यक्ति का उभरता है वह उसके चरित्र का चित्र होता है।7

भिलाली बाल लोककथाओं की पात्र-योजना सुदृढ़ है। पेड़, पक्षी, पालतु एवं वन्य प्राणी इनके मुख्य पात्र होते हैं। इन पात्रों के कारण बच्चों की रूचि एवं जिज्ञासा बढ़ती जाती है और उन्हें मनोरंजन के साथ शिक्षा मिल जाती है। अन्ध्यारी रात मा टोप-टोप नाम की कथा के मुख्य पात्र बन्दर सिंह एवं कुम्भकार है। यह कथा शिक्षा से ओतप्रोत है और कम पात्रों में ही अदभुत संदेश दे जाती है कि सदैव सतर्क रहना चाहिए असावधानी जी का जंजाल बन जाती है। गधे की लात नामक लोककथा भरपूर ठहाके लगवाती हुई उद्घोषणा करती है कि नीति से काम लिया जाए तो निर्बल भी सबल को पटकनी दे सकता है। शिक्षार्थी का सर्वांगीण विकास करना पाँचवा प्रमुख उद्देश्य है। यदि सम्पूर्णता में देखा जाय तो इस लक्ष्य से अन्य सभी उद्देश्य गहराई से जुडे है।8

निष्कर्ष

वर्तमान में ये लोककथाएँ सुदीर्घ यात्रायें भी करने लगी हैं। भिलाला समुदाय मजदूरी करने अन्य जिलों में जाते तो इन कथाओं को वहाँ ले जाते हैं। कुछ भिलालों ने गुना, ग्वालियर, अशोकनगर आदि जिलों में बीहड़ भूमि को उपजाऊ बनाकर खेती निकाली और वहीं बस गये। इस प्रकार पूरे प्रदेश में विस्तार करते हुए भिलाली बाल कथाओं को भी फैला रहे हैं, जो हृदय परिवर्तन करने में समक्ष हैं। भिलाली बाल लोककथाओं में जीवन को समझने की पैनी सूझ और संस्कारों को स्थापित करने की क्षमता है। यह आत्मबल को उत्कृष्ट बनाती है तथा प्रेम, दया, श्रद्धा, सेवा, समरसता आदि सदगुणों को बाल हृदय में अंकुरित करती हैं। जीवन को समुन्नत एवं समुज्ज्वल बनाने के लिए अच्छे भावों, विचारों, गुणों तथा कार्यों को आत्मसात करना होता है। ये कथाएँ यही शिक्षा देती है, विकास करती है। भिलाली बाल कथाएँ आज भी वनांचल में शुभ कार्यों का प्रेरक केन्द्र बनी हुई हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1 डॉ. परशुराम शुक्ला, लोक संस्कृति : अवधारणा और तत्व, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, पृष्ठ 75
2 डॉ. अशोक डी पाटिल, भील जनजीवन और संस्कृति, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, पृष्ठ 91
3 डॉ. परशुराम शुक्ला, लोक संस्कृति : अवधारणा और तत्व, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, पृष्ठ 91
4 डॉ. परशुराम शुक्ला, लोक संस्कृति : अवधारणा और तत्व, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, पृष्ठ 91
5 डॉ. परशुराम शुक्ला, लोक संस्कृति : अवधारणा और तत्व, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, पृष्ठ 92
6 डॉ. परशुराम शुक्ला, लोक संस्कृति : अवधारणा और तत्व, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, पृष्ठ 93
7 डॉ. परशुराम शुक्ला, लोक संस्कृति : अवधारणा और तत्व, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, पृष्ठ 93
8 डॉ. परशुराम शुक्ला, लोक संस्कृति : अवधारणा और तत्व, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, पृष्ठ 94